CHAPTER 7

BUDDHIST STUDIES

Doctoral Theses

01. दीपक कुमार
भारत में बौद्ध प्रतिमा का उद्भव एवं विकास (कुषाण से गुप्त काल तक)।
निर्देशिका: डॉ. नीरजा शर्मा
Th 27379

सारांश

प्रस्तुत शोध "भारत में बौद्ध प्रतिमा का उद्भव एवं विकास (कुषाण से गुप्त काल तक)" का मुख्य उद्देश्य कुषाण से गुप्त काल तक बौद्ध प्रतिमाओं के समग्र (प्रतिमा शास्त्रीय व शैलीगत) विकास का अध्ययन करना है। अत: यह कई महत्त्वपूर्ण प्रश्नों को पटल पर रखती है, जो मेरे अध्ययन के उद्देश्य हैं यथा- • बुद्ध रूपांकन के प्रारम्भिक प्रयास में प्रयुक्त प्रतीकों का आधार क्या है? • बुद्ध के मानवीय रूपांकन के प्रेरक तत्त्व क्या थे तथा धार्मिक- दार्शनिक परिवर्तनों ने इसमें क्या योगदान दिया? • जातकों के व्यापक अंकन का प्रयोजन क्या था? • बोधिसत्तव रूप में बुद्ध का मूर्तन? • कला में बुद्ध के जीवन दृश्यों के कथात्मक अंकनों के उद्भव के कारण क्या थे? • बौद्ध साहित्य में दार्शनिक विकास के प्रभाव एवं बुद्ध प्रतिमा निर्माण के क्या आधार थे? • बुद्ध प्रतिमा के उद्भव की पृष्ठभूमि एवं विविध मतों के साथ बुद्ध प्रतिमाओं की विशेषताओं का विवेचन। • बुद्ध के साथ अंकित चामरधारी बोधिसत्त्वों के प्रतिमाशास्त्रीय विकास का विश्लेषण आदि। प्रस्तुत अध्ययन में ऐतिहासिक एवं विश्लेषणात्मक शोध प्रविधि का अनुपालन किया गया है। कलात्मक साक्ष्यों की व्याख्या साहित्यिक सामग्री के बिना सम्भव नहीं है। इस हेतु मुख्यतः प्रारम्भिक पालि बौद्ध साहित्य, बौद्ध संकर संस्कृत साहित्य व बौद्ध संस्कृत साहित्य का उपयोग किया गया है। कला विषयक अध्ययनों हेतु क्षेत्र कार्य अनिवार्य है। अतः क्षेत्र कार्य के अन्तर्गत महत्त्वपूर्ण बौद्ध कला-केन्द्रों, संग्रहालयों व विविध पुस्तकालयों का भ्रमण कर तथ्यों का संकलन किया गया है। विश्लेषणात्मक शोध प्रविधि के तहत पहले से उपलब्ध सूचनाओं/विवरणों व तथ्यों का अध्ययन किया गया है। शोध विषय से सम्बंधित स्थलों, संग्रहालयों का भ्रमण किया और क्षेत्र परीक्षण के दौरान शोध विषय से सम्बंधित समस्त जानकारियों को अपने शोध में शामिल किया है। चूंकि अध्ययन का क्षेत्र व्यापक है अत: कतिपय छाया-चित्रों हेतु इन्टरनेट का भी उपयोग किया गया है।

विषय सूची

1 भूमिका 2. बौद्ध धर्म का सामान्य परिचय 3. प्रारम्भिक बौद्ध प्रतीक चिन्ह 4. कला में जातक कथाओं एवं बुद्ध के जीवन दृश्यों का कलात्मक अंकन 5. बुद्ध प्रतिमा का उद्भव एवं विकास 6. बौद्ध प्रतिमाओ का विकास । निष्कर्ष । सन्दर्भ सूची ।

02. DWIVEDI (Jyoti)
The Biography of the Buddha: A Critical Examination of the Archeological Sources.
Supervisors: Prof. I. N. Singh and Prof. Prerna Malhotra
Th 27370

Abstract

There is a general consensus amongst historians that it is almost impossible to write the historical biography of the Buddha. Firstly, the entire gamut of

source material is of religious nature. Religious texts do not necessarily worry too much about history as history is not exactly their goal or requirement. Secondly, a religious hero being a quintessential example of the good and the moral, his biography is interspersed with all kinds of mythical details about his deeds and achievements. The end result of all this is that it is impossible to untangle the skein of the historical from the mythical. The early Buddhist texts contain very little information about the birth and youth of Gotama Buddha. Later biographies developed a dramatic narrative about the life of the young Gotama as a prince and his existential troubles. They also depict Gotama's father Śuddhodana as a hereditary monarch of Ikṣvāku lineage (Pāli: Okkāka). That being said, it is improbable because a number of historians believe that Śuddhodana was only a Śākya aristocrat (khattiya) and that the Śākya republic was not an inherited monarchy.

Contents

1. Introduction 2. Life in the Previous Births 3. Conception and Birth 4. Life in the Palace 5. Abhiniṣkramaṇa to Bodhi 6. Bodhi to Nirvāṇa 7. Conclusion. Appendix and Bibliography.

03. गहलोत (प्रीति)
बौद्ध धर्म और अम्बेडकर: एक समग्र अध्ययन (अतीत एवं वर्तमान परिप्रेक्ष्य में)।
निर्देशिका: डॉ. सुष्मिता
Th 27378

सारांश

आज से लगभग छब्बीस सौ वर्ष पूर्व सिद्धार्थ गौतम ने अपने अथक परिश्रम के द्वारा चार असंख्य और एक लाख कल्प तक 'पारमी' के संकल्प को 'बोधिसत्व' के रूप में पालन करते हुए अपने तीक्ष्ण प्रज्ञा-द्वारा प्रकृति में विलुप्त विपश्यना ध्यान साधना विधि का पुन: अनुसन्धान कर 'बुद्धत्व' को प्राप्त किया तथा 'सम्यक् बुद्ध' कहलाये। इस भावना से अभिप्रेरित लगातार पैंतालीस वर्षो तक धम्म की शिक्षा को मुक्तभाव से वैश्विक सर्वकल्याण के लिए बाँटते रहे तथा इसे जनमानस के लिए व्यवहारिक रूप प्रदान किया। भगवान बुद्ध ने तत्कालीन समय में समाज में व्याप्त विभिन्न प्रकार के नकारात्मक प्रथाएँ जैसे: वर्ण व्यवस्था, जाति व्यवस्था, धार्मिक अंधविश्वास तथा कर्मकांड, अप्राकृतिक एवं अवैज्ञानिकता, बलि एवं यज्ञ प्रथा, भाग्यवाद एवं आशीर्वाद वाद, सामाजिक असमानता के खिलाफ एक धार्मिक क्रांति, बौद्धिक क्रांति की थी और वैश्विक समाज में आमूलचूल बदलाव लाये थे और बौद्ध धर्म को संस्थापित किया। डॉ अंबेडकर ने, जीवन की संघर्ष यात्रा देखी कि डॉ अंबेडकर ने किस प्रकार बचपन से कठोर वर्ण व्यवस्था, घोर जाति प्रथा, छुआछूत, अमानवीय व्यवहार, सामाजिकता का दंश झेल चुके थे, जिसे स्वयं था और कटु अनुभव किया था। 1935 में कहा था कि हिन्दू धर्म में जन्म तो लिया हैं पर उस धर्म में रहकर मरेंगे नहीं। 20वी शताब्दी के आधुनिक भारत के मध्य में वर्ण व्यवस्था, जातिवाद, नस्लवाद, धार्मिक कर्मकांड, ब्राह्मण वाद, सांप्रदायिकता वाद, छुआछूत के खिलाफ आमूलचूल परिवर्तन लाए थे। जिससे असंख्य शूद्रों, दलित, शोषितों, आदिवासियों, पिछड़ों का कल्याण हुआ और अंतत: 1956 में नव बौद्धयान की स्थापना की। वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में विषय शोध की गरिमा और मूल्य को देखते हुए मैंने बौद्ध धर्म और अम्बेडकर : एक समग्र अध्ययन (अतीत एवं वर्तमान परिप्रेक्ष्य में) शीर्षक को चुना हैं और शोध का निर्णय लिया है।

विषय सूची

1. भगवान बुध: एक समग्र जीवन एवं पृष्टभूमि 2. बुद्ध की शिक्षाएँ (धम्म और बौद्ध धर्म 3. भीम राव अम्बेडकर एक जीवन परिचय और तत्कालीन परिवेश 4. नव बौद्ध यान' धर्म और डॉ. भीम राव अम्बेडकर: एक संक्षिप्त अध्ययन 5. उपसंहार । सन्दर्भ ग्रन्थ सूची ।

04. JOON (Nitasha)

Biography of the Buddha- A Historical Examination of Various Legends.

Supervisor : Dr. Shalini Singhal

Th 27371

Abstract

Ethical value and addition of Biography always highlight the supernatural approaches. In the right line, Sidhartha was one of them whose virtue and personality is leading to us through unfolded times. Sidhartha (means approved objective), its actual connotation is reflected through Buddhist canonical literature. The biography of Gautam Buddha proves that his personality is the need of Vishwa (world). Due to this specific perspective, I reconstructed his biography through many classical biographies: the enlightenment to this historic person perpetually proved as the center of light and learning. The central point is to reveal his highness, for example Lalitavistara, Mahavastu and Buddha Charita focused on praising his pious personality and highly ethical character. In that context, I have noted down that if anyone wishes to learn something and gain something; the first intention should be applied towards appreciation. Although analytical and critical thinking is required or renewing the knowledge from time to time, in spite of that, continuous sustainable functionality is a necessary stable approach; obviously, that comes through appreciation of the one. Further on, I have concentrated on the way of realisation; for example, Gautam Buddha denoted for umpteen times that he could realise in all situations according to time, condition, person and place. Sometimes, he also showed some probable causes beyond the four dimensions. As we know that the four types of negations are fixed types of idea and matters. The classical biography also suggests us, at a specific level, there is no certain effect of "No" and "Yes". It is simplified that "No" may be both affirmative and negative. At the parallel, "Yes" may be both affirmative and negative. Pen-Ultimate, Buddha`s life is a source of inspiration. Nowadays, we continuously seek healing and harmonious happiness. In this case, we should live in the method of Buddha`s preachings, " preaching is not a compelling condition; preaching is not pressure to be followed " In short, do good and forget. This research leads to compassion, friendliness, ignorance and pleasant. It is very famous dialogue, "man is a social animal". The entity of human beings is required to realise the importance of dependent origination. In advance, it is discussed as Dwadasnidanchakra in Buddhist philosophy. The research remains forever.

Contents

1. Introduction 2. Constituent sources of the buddha’s biography 3. The mysterious and enlightened life of the buddha 4. Spiritual birth of gotama buddha 5. Bodhisattva: the origin through buddhist sources 6. Philosophical interpretation of pre- historic buddhas. Conclusion and Bibliography.

05. कुशवाहा (अंजू)

पर्यावरण संतुलन और उसकी समकालीन प्रासंगिकता: बौद्ध धर्म के परिप्रेक्ष्य में।

निर्देशक: प्रो. इन्द्र नारायण सिंह

Th 27377

सारांश

पर्यावरण संतुलन और उसकी समकालीन प्रासंगिकता: बौद्ध धर्म के परिप्रेक्ष्य में' 'पर्यावरण संतुलन और उसकी समकालीन प्रासंगिकता: बौद्ध धर्म के परिप्रेक्ष्य में' विषय पर प्रस्तुत शोध पर्यावरण असंतुलन जैसे एक भयावह और नवीन संकट से लड़ने की दिशा में बौद्ध धर्म की शिक्षाओं, दर्शन और परम्पराओं में मार्ग खोजने का एक प्रयास करता है। जहां एक ओर बेहद अलग समय, लगभग 2600 वर्ष पूर्व और बेहद अलग पृष्ठभूमि में बौद्ध धर्म का उद्भव हुआ था, वहीं यह भी उतना ही सत्य है कि विश्व के विभिन्न देशों में पर्यावरण से जुड़े शोधार्थी और कार्यकर्ता अपने गहन विचार मंथन और संघर्षों की रणनीतियों के बीच उत्तरोत्तर बौद्ध धर्म की ओर आकृष्ट होते जा रहे हैं। यह एक ऐसी पृष्ठभूमि में हो रहा है जब कई कानून, अंतर्राष्ट्रीय संधियां, सरकार द्वारा चलाये जाने वाला जागरूकता अभियान अपनी प्रासंगिकता खोते जा रहे हैं क्योंकि इन सबसे बावजूद पर्यावरण संकट हल होने की बजाय गहराता जा रहा है। यह शोध सर्वप्रथम धर्म की सामाजिक प्रासंगिकता पर चर्चा करता है, कि कैसे धर्म मानवजाति की सामूहिक चेतना को निर्धारित करता है। तत्पश्चात बौद्ध साहित्य, विशेषकर कि त्रिपिटक में पर्यावरण सम्बन्धी चेतना का अवलोकन करता है। इसके बाद यह शोध मौजूद समय की समस्याओं को हल करने के एक सम्भावित उपाय के रूप में संलग्न बौद्ध धर्म (Engaged Buddhism) की अवधारणा प्रस्तुत करता है, जो विभिन्न देशों, समाजों में मौजूद चुनौतियों से संघर्ष करते हुए बौद्ध धर्म की शिक्षाओं से प्रेरणा ग्रहण करते हुए विकसित हुई थी। अंततः यह शोध पर्यावरण संकट की भयावहता को तथा सकारात्मक पारिस्थितिकी (Positive Evology) की दिनोंदिन खोती जा रही है प्रासंगिकता को रेखांकित करता है तथा इस पर्यावरण संकट को दूर करने के लिए एक सम्भावित हल के रूप में गहन पारिस्थितिकी (Deep Ecology) को सामने रखती है जो मानव जाति की प्रकृति से एकात्मकता स्थापित करती है। यह गहन पारिस्थितिकी बौद्ध धर्म में अपनी सबसे सुसंगत और सबसे सुव्यवस्थित अभिव्यक्ति प्राप्त करती है।

विषय सूची

1. भूमिका 2. बौद्ध धर्म एवं पर्यावरण 3. बौद्ध साहित्य में पर्यावरण 4. पर्यावरण संतुलन: बौद्ध धर्म के परिपेक्ष्य में 5. पर्यावरण संतुलन और उससे जूझने के उपाय । निष्कर्ष । सन्दर्भ सूची ।

06. LOCHAN (Arhana)

Brahma in Buudhist Southeast Asia: With Special References to Thailand and Combodia.

Supervisors: Dr. Sushmita

Th 27869

Abstract

This thesis examines the representation and evolution of the Hindu deity Brahmā within the Buddhist traditions and cultural landscapes of Southeast Asia, with a focus on Thailand and Cambodia. Drawing from historical texts, art, and architecture, the study investigates how Brahmā transitioned from his origins in Hindu cosmology as a creator deity, to his role in Buddhist cosmology, particularly within the aforementioned Theravāda countries. The research explores Brahmā's integration into Southeast Asian societies following the spread of Buddhism from India and highlights the complex interplay between Indianisation and local agency, revealing how Brahmā was adapted to align with indigenous cultural frameworks. By bridging the gap in existing scholarship, which often emphasises Brahmā's Hindu origins, this study sheds light on his syncretic portrayal in Buddhist cosmology and Southeast Asian culture. It contributes to understanding the dynamic interactions between Hindu and Buddhist traditions and the localisation of Indian religious elements in Southeast Asia. Ultimately, this work reveals how Brahmā's transformation reflects broader processes of cultural exchange,

adaptation, and continuity in the region`s religious history. Keywords: Brahmā, Phra Phrom, Preah Prohm, Dhamma, Dharma, Cosmology, brahmaloka, Bayon, Erawan Shrine, folklore.

Contents

1. Introduction 2. Brahma in buddha dhamma 3. Hindu deities in southeast Asia 4. Brahma in Thailand 5. Brahma in Cambodia 6. Conclusion. Bibliography.

07. मौर्य (आकाश)
मध्य प्रदेश के प्रमुख बौद्ध स्थलों का साहित्यिक एवं पुरात्विक अनुशीलन : भोपाल सम्भाग के विशेष सन्दर्भ में।
निर्देशिका : डॉ. नीरजा शर्मा
Th 27872

सारांश

यह शोधकार्य मध्य भारत में स्थित राज्य 'मध्य प्रदेश' के उन बौद्ध स्थलों पर आधारित है जिनका प्रलेखन अभी तक बहुत अल्प अथवा हुआ ही नहीं है, पर केंद्रित पूर्णतः आधारित है। यह शोध बौद्ध अध्ययन के पाठकों के मानस पटल पर इन समृद्ध पुरास्थलों को लाने का एक अल्प प्रयास है। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध का शीर्षक 'मध्य प्रदेश के प्रमुख बौद्ध स्थलों का साहित्यिक एवं पुरातात्त्विक अनुशीलन : भोपाल संभाग के विशेष सन्दर्भ में' है। प्रस्तुत शीर्षक का अनुकरण करते हुए कार्य का कुशल सम्पादन करने हेतु शोध प्रबन्ध को पाँच अध्यायों में विभक्त किया गया है। शोध का प्रथम अध्याय 'मध्य प्रदेश की भौगोलिक परिचय' है। इस अध्याय में शोध स्थली अर्थात् मध्य प्रदेश के भौगोलिक विवरणों को प्रस्तुत किया गया है। इसमें प्रदेश के विभिन्न पठार, नदियों, मृदा के प्रकार एवं शोध क्षेत्र के भिन्न-भिन्न वनों के प्रकारों का वर्णन किया है। इसी क्रम में शोध प्रबन्ध के द्वितीय अध्याय में 'मध्य प्रदेश में बौद्ध धर्म का उद्भव एवं विकास' का वर्णन किया है। इस अध्याय के अन्तर्गत प्रदेश बौद्ध धर्म के संरक्षण में 600 ई.पू. से लेकर मध्य काल के अन्त तक विभिन्न राजवंशों के द्वारा राजश्रय का प्रलेखन किया है। तृतीय अध्याय 'मध्य प्रदेश के प्रमुख बौद्ध स्थल' इसमें प्रदेश के 54 जिलो में से 16 जिलों के अन्तर्गत विस्मृत बौद्ध स्थलों का विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया है। शोध कार्य का सबसे प्रमुख भाग चतुर्थ अध्याय `भोपाल संभाग के अन्तर्गत स्थित बौद्ध स्थलों का विवरण' नामक अध्याय में भोपाल संभाग के पाँच जिले में से चार जिलों से प्राप्त होने वाले बौद्ध पुरास्थलों को प्रकाशित करने का प्रयास किया है। शोध प्रबन्ध के अन्तिम अर्थात् पंचम अध्याय में 'प्रदेश के बौद्ध पुरास्थलों का संरक्षण एवं पर्यटन प्रबन्धन संभावनाओं का अध्ययन' में प्रदेश स्थित पुराविरासतों के संरक्षण एवं विकास की संभावनाओं का विवरण प्रस्तुत किया है।

विषय सूची

1. मध्यप्रदेश की भौगोलिक पृष्ठभूमि 2. मध्य प्रदेश में बौद्ध धर्म का उद्भव एवं विकास 3. मध्य प्रदेश के प्रमुख बौद्ध स्थलों का विवरण 4. भोपाल सम्भाग के अंतर्गत स्थित जिलों के बौद्ध स्थलों का पुरातात्विक विवरण 5. प्रदेश से प्राप्त बौद्ध स्थलों का पर्यटन संभावनाओं एवं संरक्षण समस्याओं का अध्ययन । उपसंहार। सन्दर्भ ग्रंथ सूची।

08. NGUDUP (Tsering)
Origin and Development of Buddhist Pilgrimage Sites in Tawang, Arunachal Pradesh: An Archeological and Literary Study.
Supervisor: Dr. Galdhan Sangai
Th 27372

Abstract

The doctoral dissertation studied the importance of pilgrims in Buddhism. The topic is titled "Origin and Development of Buddhist Pilgrimage Sites in Tawang, Arunachal Pradesh: An Archeological and Literary Study." The study highlighted the origin and development of Buddhism in the Mon region and especially tried to seek out the important names, periods, and sites where the great Buddhist masters visited and gave discourse in the region. Most of the pilgrim sites are studied through textual sources as well as oral narratives. There are many old pilgrim sites related to Guru Padmasambhava in Monyul with an undated written textual guidebook or without written text. Most of the pilgrimage sites are still intact, though some sites are affected due to the construction of motor- roads. And also through the evidence and biographies of some learned Buddhist practitioners, they suggest and provide comparable information on the advent of Buddhist temples and monasteries that came around in the 13th century. Since that period also suggests that the various sects of Indo-Tibetan Buddhism flourished in Monyul. Those religious centres and concerned pilgrim sites, are still to be found intact nowadays, where prominent religious figures were studied by outlining their importance and their religious significance from the archaeology and literature. As the local reverences to those sites are immense even today, this study will raise impetus for ethnohistorical interest in the region. Furthermore, the outcome of the study should not least be a benefit to the local communities, who will learn the significance of the pilgrim sites and their cultural history.

Contents

1. Introduction 2. A Brief Note on the Advent and Development of Buddhism in Tawang District 3. Importance of Pilgrimage and its Aspects 4. A Study on the History of the Buddhist Pilgrimage Sites in Tawang District 5 Pilgrimage to the Buddhist Monasteries and Temples in the Region 6. The Way of Pilgrim Practices in the Region 7. Brief Introduction of Some Important Buddhist Masters Associated with Pilgrimage Sites in Region 8. Conclusion, Map, Appendices and Bibliography.

09. PANWAR (Hema)
A Study of Various Facets and Striking Similarities of Buddhism and Utilitarianiam.
Supervisor: Dr. Meeta Nath
Th 27373

Abstract

My thesis "A Study of Various Facets and Striking Similarities of Buddhism and Utilitarianism" delves deeply into the intricate realms encompassing the notions of happiness and suffering. It rigorously examines these profound human experiences through the distinct philosophical perspectives of Buddhism, Utilitarianism, and a little bit of Kant`s view. By delving into the ethical dimensions of happiness and suffering, this thesis aims to uncover their profound influences on our understanding of human existence and moral reality. Understanding these philosophical paradigms requires an immersive exploration of their philosophical roots, historical contexts, and core principles. Buddhism, rooted in Siddhartha Gautama`s teachings, provides profound insights into the human experience of suffering. Buddhism, with its profound

insights and practical directives, provides a comprehensive framework for navigating life`s complexities, inviting individuals to pursue genuine happiness and liberation from the cycle of suffering. In stark contrast to Buddhism`s, Utilitarianism is a consequentialist ethical theory propounded by Jeremy Bentham and later revised by John Stuart Mill. This consequentialist framework assesses the morality of actions by their contribution to collective welfare. Kant marks a radical departure in ethical thinking by prioritizing a deontological approach. This philosophical paradigm reframes the ethical discourse by shifting the focus from the consequences of actions to the moral principles that govern these actions. The culmination of this thesis goes beyond theoretical discourse. It has extensive implications across various domains, providing invaluable insights for ethical deliberations, psychological studies, societal governance, and practical applications. In essence, this comparative study strives to illuminate the multifaceted dimensions of happiness and suffering within human existence. It aspires to broaden our perspectives, fostering enriched discussions on the ethical dimensions of these fundamental concepts and paving the way for a more holistic understanding of human flourishing and ethical behaviour.

Contents

1. Introduction 2. Buddhism and utilitarianism 3. Buddhism on happiness and suffering 4. Utilitarianism on happiness and suffering 5. Differences and similarities between buddhism and utilitarianism 6. Kant"s concept of happiness 7. Conclusion, Endnotes and Bibliography.

10. राय (विनय कुमार)
प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा की वर्तमान में प्रासंगिकता: बौद्ध शिक्षा दर्शन के विशेष संदर्भ में।
निर्देशक: डॉ. दुर्योधन नाहक
<u>Th 27387</u>

सारांश

प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा की वर्तमान में प्रासंगिकता: बौद्ध शिक्षा दर्शन के विशेष सन्दर्भ में भूमिका प्रस्तुत शोध-प्रबंधन प्रणयन की प्रेरणा से सम्बद्ध एक रोचक घटना वर्णनीय है। मैं काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी के धर्म एवं दर्शनशास्त्र विभाग में परास्नातक अंतिम वर्ष में अध्ययनरत था। सारनाथ (वाराणसी) के तिब्बती अध्ययन एवं शोध-संस्थान में एक सेमिनार आयोजित हुआ था, जिसका विषय था "सनातन धर्म और बौद्ध धर्म में साम्य एवं वैषम्य" । प्रमुख वक्ता थे - डॉ- लालचन्द्राचार्य, डी.लिट्. (द्वय) और सह वक्ता डॉ. आनन्द मिश्रा सर। उन्होंने बड़े ही विस्तार तथा सुरुचिपूर्ण ढंग से सेमिनार का प्रतिपादन करते हुए बताया कि वेदान्त के अनुसार - सनातन धर्म और बौद्ध धर्म में सहज रूप से समानता है। आपने कहा त्रिशरण तथा आर्यसत्य आदि का मूल स्रोत वेदान्त में निहित है। वस्तुतः बौद्ध धर्म का मूल उत्स वेदान्त ही है। इसलिए दोनों में अत्यधिक समानता है। किन्तु पौराणिक साहित्य के आधार पर दोनों में सर्वाधिक विषमता है। मैं बड़े ध्यान से सुन रहा था, प्रभावित भी हुआ और तभी से बौद्ध शिक्षा-दर्शन एवं बौद्ध साहित्य के अध्ययन की अभिलाषा जागृत हुई। परिणामतः कालान्तर से मैं बौद्ध अध्ययन का विद्यार्थी बन गया। आज प्रस्तुत शोध-विषय इसी जिज्ञासा की परिणति है। प्रस्तुत शोध विषय "प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा की वर्तमान में प्रासंगिकता: बौद्ध शिक्षा दर्शन के विशेष सन्दर्भ में" पूर्णरूप से भारतीय ज्ञान परंपरा में निहित बौद्ध शिक्षा-दर्शन पर आधारित है।

विषय सूची

1. भूमिका 2. प्राचीन भारतीय ज्ञान परम्परा 3. प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा में बौद्ध शिक्षा दर्शन के नैतिक आयाम 4. बौद्ध शिक्षा दर्शन के दर्शनिक आयाम 5. बौद्ध शिक्षा दर्शन की वर्तमान मे प्रसंगिकता एवं उपयोगिता । निष्कर्ष एवं सन्दर्भ सूची ।

11. SANGWAN (Amit)

Impact of Buddhism on the North-Eastern Indian Contemporary Society.

Supervisor: Prof. Ranjana Rani Singhal

Th 27374

Abstract

The Thesis is entitled "Impact of Buddhism on the North-Eastern Indian Contemporary Society." My work is divided into eight chapters. The first chapter– "Buddhism in Sikkim and its Impact on Society." The second chapter– "Buddhism in Assam and its Impact on Society." The third chapter – "Buddhism in Arunachal Pradesh and its Impact on Society." The fourth chapter "Buddhism in Meghalaya and its Impact on Society." The fifth chapter "Buddhism in Tripura and its Impact on Society." The sixth chapter - "Buddhism in Nagaland and its Impact on Society." The seventh chapter – "Buddhism in Manipur and its Impact on Society." The eighth chapter – "Buddhism in Mizoram and its Impact on Society." In the last there is conclusion and Bibliography.

Contents

1. Buddhism in sikkim and its impact on society 2. Buddhism in Assam and its impact on society 3. Buddhism in Arunachal Pradesh and its impact on society 104-130 4. Buddhism in Meghalaya and its impact on society 5. Buddhism in Tripura and its impact on society 6. Buddhism in Nagaland and its impact on society 7. Buddhism in Manipur and its impact on society 8. Buddhism in Mizoram and its impact on society. Conclusion and Bibliography.

12. SHIRAZINEJAD (Ameneh)

Phronesis, Moral Creativity and Women in The Therigatha and Their-Apadana.

Supervisor: Dr. K.N. Tiwari

Th 27870

Abstract

The Therīgāthā and Therī-Apadāna, significant parts of the Khuddaka Nikāya within the Pali canon, offer profound insights into the lives of early Buddhist nuns. The Therīgāthā, often translated as `Verses of the Elder Nuns` (Pāli: therī = elder [feminine noun] + gāthā = verse), is celebrated for its religious depth and literary elegance. As the first collection of women`s poetry in both Indian and world literature, it stands out not only for its age but also as a foundational work of Indian poetry and a unique contribution to global literary heritage. The Apadāna, meanwhile, delves into the notion of `glorious achievement` and the consequential outcomes of karmic actions, with its name in the Pāli canon suggesting `cutting` or `reaping`—a metaphor for `reaping what one sows. Notably, the text highlights 40 women who are portrayed not just as historical figures but as personifications of meritorious

deeds. The Therīgāthā and Therī-Apadāna not only recount decisions made in various life aspects but also illustrate the path to awakening for contemporary practitioners, regardless of gender. This research contributes to the reevaluation of the roles of women in in the THERĪGĀTHĀ and THERĪ-APADĀNA, focusing on their ethical and spiritual development. In the midst of these narratives of Buddhist women renunciation and spiritual awakening, we find a bridge to Aristotle`s ancient Western philosophy, where the pursuit of virtue through practical wisdom, or phrónēsis, resonates with the essence of moral creativity. Phrónēsis, or Aristotle`s notion of practical wisdom, is the dynamic application of understanding virtue. It requires one to navigate and decide on the appropriate course of action in specific circumstances artfully, masterfully, and gracefully.

Contents

1. Introduction 2. One: Women in buddhism 3. The therigatha 4. Their-apadana 5. Aristotle ethics theory and moral creativity. Conclusion. Bibliography. Appendix.

13. सिंह (कुलदीप)
पंजाब में रविदासी आंदोलन एवं नव-बौद्धवाद की सामाजिक, आर्थिक पृष्टभूमि ।
निर्देशक: डॉ. रत्नेश कुमार त्रिपाठी
Th 27386

सारांश

भारतीय भूमि पर अनेकों सामाजिक, धार्मिक आंदोलन हुए। इसी प्रकार के आंदोलन में हमनें नव-बौद्धवाद और रविदासी आंदोलन का अध्ययन किया हैं। नव-बौद्धवाद आंदोलन की शुरुआत महाराष्ट्र से डॉ. भीमराव अम्बेडकर के धर्म परिवर्तन से मानी जाती है। इस आंदोलन के प्रेरणा स्रोत के रूप में महात्मा बुद्ध को माना जाता है क्योंकि मानव सभ्यता में सर्वप्रथम महात्मा बुद्ध ही एक ऐसा नाम है जिन्होंने समानता, स्वतंत्रता और बंधुता की बात की। इसी प्रकार अगर हम रविदासी आंदोलन की बात करें तो इसकी शुरुआत पंजाब से हुई। इस आंदोलन के प्रेरणा स्रोत के रूप में संत रविदास को माना जाता है। रविदास ने भी अपनी वाणी में समानता, स्वतंत्रता और बंधुता को मानवता का अहम लक्ष्य बताया। भारतीय भूमि पर ए आंदोलन अलग-अलग क्षेत्रों के होते हुए भी इनके संघर्ष का मूल उद्देश्य समानता, स्वतंत्रता और बंधुता ही था जो कि भारतीय समाज में चली आ रही असमानता की परंपरा को चुनौती देना था और यह साबित करना था कि सभी मनुष्य एक समान है। इसलिए मानव समाज में ऊँच-नीच जातिगत भेदभाव का कोई औचित्य नहीं है।

विषय सूची

1. रविदासी आंदोलन 2. नवबौद्धवाद 3. रविदासी आंदोलन सामाजिक आर्थिक दशा 4. नव बौद्धों की सामाजिक और आर्थिक दशा 5. उपसंहार । सन्दर्भ ग्रन्थ सूची ।

14. SONU KUMAR
Evolving Ethical Paradigms and Moral Values in Ancient India: A Historical Study.
Supervisor: Prof. Indra Narain Singh
Th 27375

Abstract

Abstract The study titled "Evolving Ethical Paradigms and Moral Values in Ancient India: A Historical Study" aims to explore the multifaceted evolution of ethical and moral philosophies that shaped the ancient Indian civilization. Through a meticulous historical analysis, the thesis investigates the complex interplay of religious, philosophical, and political influences that contributed to the ethical frameworks and values of ancient India. The research is structured into six comprehensive chapters, each delving into different aspects of the subject matter. Chapter 1: Introduction The introductory chapter sets the stage by outlining the scope, objectives, and significance of the study. The chapter also discusses the methodological approaches and sources utilized, including textual analysis of ancient scriptures, historical records, and secondary literature. Chapter 2: Theoretical Underpinnings of Ethics and Values This chapter also discusses the role of dharma (duty) and karma (action) as central tenets in the ethical discourse of ancient India. Chapter 3: Ethics and Values in Ancient Sanatan Tradition The chapter also considers the influence of major deities and the concept of divine justice in shaping ethical norms. Chapter 4: Ethics and Morality in Ancient Nastika Tradition This chapter explores the moral values and ethical principles espoused by these traditions, highlighting their contributions to the broader ethical discourse in ancient India. Special attention is given to the concepts of non-violence, asceticism, and skepticism. Chapter 5: Ethics and Morality in Statecraft The chapter also discusses the role of kingship and the moral responsibilities of rulers in maintaining social order and harmony. Chapter 6: Conclusion The chapter also identifies areas for further research and the potential implications of the study for understanding the historical development of ethics and morality.

Contents

1. Introduction 2. Theoretical underpinnings of ethics and values 3. Ethics and morality in ancient sanatan knowledge tradition 4. Ethics and morality in ancient nastika tradition 5. Ethics and morality in statecraft 6. Conclusion and Bibliography.

15. यादव (देवेन्द्र)

उत्तर प्रदेश में बौद्ध धर्म के सांस्कृतिक और ऐतिहासिक आयामों पर वैश्विकरण का प्रभाव।

निर्देशक : डॉ. नीरजा शर्मा

<u>Th 27871</u>

सारांश

उत्तर प्रदेश में बौद्ध धर्म के सांस्कृतिक और ऐतिहासिक आयामों पर वैश्वीकरण का प्रभाव व्यापक और विविधतापूर्ण रहा है, जिससे कई महत्वपूर्ण परिवर्तन और विकास हुए हैं। ऐतिहासिक बौद्ध धरोहरों, तीर्थस्थलों, मठों और स्मारकों को वैश्वीकरण के दौर में संरक्षण और पुनरुद्धार के लिए अंतरराष्ट्रीय सहयोग प्राप्त हुआ है। यूनेस्को और अन्य संगठनों के समर्थन से इन स्थलों को वैश्विक धरोहर के रूप में मान्यता मिली है, जिससे उनकी सुरक्षा और महत्ता बढ़ी है। वैश्वीकरण ने बौद्ध वस्त्रों, आभूषणों, खान-पान, और कलाकृतियों में विविधता लाई है, जो पारंपरिक और आधुनिक तत्वों का मिश्रण दर्शाती है। बौद्ध तीर्थस्थलों पर अंतरराष्ट्रीय तीर्थयात्रियों की संख्या में वृद्धि से स्थानीय

अर्थव्यवस्था को भी बढ़ावा मिला है, और विभिन्न देशों के बौद्ध अनुयायियों के संपर्क से सांस्कृतिक आदान-प्रदान हुआ है। बौद्ध धर्म के धार्मिक विश्वासों और कर्मकाण्डों में भी आधुनिक दृष्टिकोण और प्रथाओं का समावेश हुआ है, जिससे धर्म की प्रासंगिकता और व्यापकता बढ़ी है। बौद्ध त्यौहारों का आयोजन अब अंतरराष्ट्रीय स्तर पर होने लगा है, जिससे वैश्विक सहभागिता और सांस्कृतिक समृद्धि में वृद्धि हुई है। बौद्ध मठों और स्मारकों के संरचना और संचालन में आधुनिक तकनीकों और सामग्रियों का उपयोग किया जा रहा है, जिससे वे अधिक आकर्षक और सुलभ बने हैं। कुल मिलाकर, वैश्वीकरण ने उत्तर प्रदेश की बौद्ध धरोहर और संस्कृति को समृद्ध और विस्तृत किया है, जिससे यह धर्म न केवल अपनी प्राचीन धरोहर को संरक्षित कर रहा है, बल्कि वैश्विक स्तर पर अपनी पहचान को सुदृढ़ कर रहा है। इस प्रकार, वैश्वीकरण ने उत्तर प्रदेश की बौद्ध धरोहरों और संस्कृति को एक नई दिशा और ऊर्जा दी है, जिससे वे आधुनिक युग की चुनौतियों और अवसरों के साथ तालमेल बिठाते हुए मानवता के कल्याण के लिए प्रेरणा का स्रोत बने हुए हैं।

विषय सूची

1. भूमिका 2. उत्तर प्रदेश का परिचय : बौद्ध धर्म के संदर्भ में 3. उत्तर प्रदेश में बौद्ध धर्म के विकास में प्रमुख महापुरूषों का योगदान 4. उत्तर प्रदेश में बौद्ध संस्कृति पर वैश्वीकरण का प्रभाव 5. उत्तर प्रदेश की ऐतिहासिक बौद्ध धरोहरों पर वैश्वीकरण का प्रभाव। उपसंहार। सन्दर्भ ग्रंथ सूची।

16. यादव (सूरज प्रसाद)
पूर्वी उत्तर प्रदेश के प्रमुख बौद्ध स्थलों का साहित्यिक एवं पुरातात्विक अध्ययन।
निर्देशिका: डॉ. नीरजा शर्मा
<u>Th 27383</u>

सारांश

पूर्वी उत्तर प्रदेश के प्रमुख बौद्ध स्थलों का साहित्यिक एवं पुरातात्विक अध्ययन" पूर्वी उत्तर प्रदेश के प्रमुख बौद्ध स्थलों का साहित्यिक एवं पुरातात्विक अध्ययन के शीर्षक पर प्रस्तुत शोध कार्य करने का उदेश्य यह है कि बौद्ध धर्म से संबंधित पूर्वी उत्तर प्रदेश में स्थित बौद्ध स्थलों को विश्व पटल पर उजागर करना । बौद्ध धर्म एवं संस्कृति का इतिहास बहुत ही गौरवपूर्ण एवं ऐतिहासिक रहा है ,जिसने विश्व पटल पर अपनी एक अमिट छाप छोड़ी हैं।समय और परिस्थितियों के करण बौद्ध धर्म की लोकप्रियता में ह्रास आ गया था । जिसके परिणामस्वरूप बौद्ध से संबंधित बहुत से ऐसे स्थल जिन्हें प्राचीन समय में ख्याति प्राप्त थी एवं वह पूर्णतः स्थापित थे | कुछ समय पश्चात विदेशी आक्रमण एवं बौद्ध धर्म की लोकप्रियता में ह्रास होने के कारण यह स्थल अपने अस्तित्व को खोते चले गए । प्रस्तुत शोध कार्य के माध्यम से पूर्वी उत्तर प्रदेश बौद्ध स्थलों की विलुप्त अस्मिता को पुनः स्थापित कर इसके गौरवशाली इतिहास को विश्वपटल पर पुनः स्थापित करने का प्रयास किया गया है । इसके अतिरिक्त इन प्रमुख बौद्ध स्थलों के धार्मिक एवं सांस्कृतिक पहलुओं के साथ साथ पर्यटन की दृष्टि से कार्य करने का प्रयास किया गया है इन स्थलों की लोकप्रियता न केवल भारत में अपितु पूरे विश्व मे प्रतिबिम्बित हो सके । इसके संदर्भ में पूर्व समय में अनेको कार्य किये गए है जिसमें सबसे उल्लेखनीय एवं महत्वपूर्ण कार्य भारतीय पुरातत्व विभाग, एशियार्टिक सोसाइटी ऑफ बंगाल , राज्य सरकार , केंद्र सरकार एवं कुछ निजी संस्थान के द्वारा किया गया है । मेरा यह शोध कार्य एक प्रयास है जिसकी सहायता से इन बौद्ध स्थलों के गौरवशाली इतिहास को पुनः लोगो के समक्ष प्रस्तुत किया जा सके।

विषय सूची

1. पूर्वी उत्तर प्रदेश का सामान्य परिचय 2. पूर्वी उत्तर प्रदेश का साहित्यिक एवं पुतात्विक अध्ययन 3. उत्तर प्रदेश के प्रमुख बौद्ध स्थल 4. पूर्वी उत्तर प्रदेश में स्थित बौद्ध स्थल का महत्व धार्मिक एवं पर्यटन परिपेक्ष्य मे । उपसंहार । सन्दर्भ ग्रन्थ सूची।